पंचकल्याणक में तीर्थंकर प्रभु के वैराग्य प्रसंग पर लौकान्तिक देवों द्वारा अनुमोदना

रचयिता– प.पू.मुनि श्री 108 निर्वेग सागर जी महाराज

1. चौपाई– जल बुद बुद सम जीवन जाना।

सच्चा संयम पथ पहचाना।।

धन्य धन्य हैं भाग्य विधाता

प्रभु चरणों में शीश नवाता।।

हे भव्य प्राणियों के भाग्य विधाता ! यह जीवन, धन सम्पदा, जवानी सब कुछ तो पानी के बुलबुले के समान क्षणभंगुर है। ऐसे क्षण भंगुर संसार को छोड़कर, संयम पथ स्वीकार करने का आपने जो भाव बनाया है वह प्रशंसनीय है। आप धन्य हैं धन्य है धन्य है।

2. चौपाई– झूठे जग के सपने सारे,

भोग लगे सब खारे–खारे।

मात–पिता सुत कोई न अपना,

सिद्ध प्रभु का नाम ही जपना।

हे त्रिलोकीनाथ ! पाँचों इन्द्रियों के भोग, उनसे उत्पन्न सुख वास्तविक सुख नहीं सुखाभास है। माता–पिता परिवार जन के संबंध स्वप्न के समान नष्ट हाने वाले हैं, ऐसा विचार कर आपने जो दीक्षा धारण करने का भाव बनाया है वह वंदनीय है आप धन्य हैं धन्य हैं धन्य है।

3. चौपाई– नश्वर है संसार की माया,

नश्वर है यह प्यारी काया।

तपक 2 जीवन सफल बनाना

धन्य है जिनवर आपने ठाना।।

हे स्वयंभू ! आप जन्म से ही मति, श्रुत और अवधि ज्ञान के धारी हैं। संसारी जीवों को आजीविका का उपदेश दने वाले प्रजापति हैं। आपने संसार की नश्वरता और शरीर की अशुचिता का चिंतन करते हुए तप धारण करने का जो भाव बनाया है वह अनुकरणीय है। आप धन्य हैं धन्य हैं धन्य है।

4. चौपाई– जीव अकेला जन्म है पाता,

नरकादि गतियों में जाता।

पञ्चम गति को पाने स्वामी,

धन्य ! बन रहे शिवपथ गामी।।

हे आदीश्वर ! नरक, तिर्यंच, मनुष्य एवं देव गतियों में कहीं भी सच्चा सुख नहीं है, सच्चा सुख तो निज आत्मा में ही है। उस आत्मिक सुख की प्राप्ति हेतु आपने जो सकल चारित्र को प्राप्त करने का भाव बनाया है वह प्रशंसनीय है। आप धन्य है धन्य हैं धन्य हैं।

5. चौपाई– अष्टकर्म हैं दुख के दाता,

छूटे इनसे मेरा नाता।

संयम पथ है प्राण प्रदाता,

धारा, जिसने मोक्ष है पाता।।

हे परमपिता ! आठ कर्म निश्चित ही दुःख देने वाले हैं, पूर्ण सुख की प्राप्ति के लिए बाधक इन कर्मो को पराजित करना अनिवार्य हैं। ऐसा चिन्तन कर आपने रत्नत्रय को धारण करने का जो भाव बनाया वह अति उत्तम है आप धन्य हैं धन्य हैं धन्य हैं।

6. चौपाई– दुर्लभ है नरभव का पाना,

दुर्लभ है मुनिवर का बाना।

दुर्लभ दुर्लभ भाव बनाए,

धन्य महामना मुक्ति पाए।।

हे नरश्रेष्ठ ! अत्यन्त दुर्लभ मनुष्य पर्याय को प्राप्त कर, मोक्ष रूपी लक्ष्मी को अंगीकार करने का आपने जो भाव बनाया वह अत्यंत प्रशंसनीय है। आप धन्य है धन्य हैं धन्य हैं।

7. चौपाई– मोहमहातम गहन जो छाया, समदर्शन से दूर भगाया।

तीनलोक के नाथ हमारे, मोक्षमार्ग के बने सहारे।।

हे पुरूषोत्त्म मोहरूपी सघन अंधकार को दूर करने वाले आपने तीनलोक के परपद को पाने की इच्छा रखते हुए मोक्षमार्गी बनने का जो भाव किया है वह सर्वोत्तम है आप धन्य हैं धन्य हैं धन्य हैं।

8. चौपाई– जग की चिन्ता छोड़ सयाने, लीन हुए शुद्धातम पाने।

कर्म शत्रु भी जिनसे हारे, मुक्ति पथ के बने सहारे।।

हे परम आत्म ध्यानी ! शुद्ध आत्म तत्व की उपलब्धि हेतु सांसारिक संकल्प–विकल्पों को छोड़ महाव्रती बनने का जो भाव आपने किया है वह अति उत्तम है। हे शुद्धोपयोगी श्रमण पद के अनुरागी आप धन्य है धन्य हैं।